आधुनिक व सनातन शिक्षा पद्धति में समन्वय हो : गुरु गौरांग दास

भास्कर प्रतिनिधि.नागपुर। आधुनिक शिक्षा पद्धति बाहरी शक्तियों पर जीत हासिल करने का ज्ञान देती है, लेकिन आंतरिक युद्ध पर जीत हासिल करनी हो तो आधुनिक शिक्षा के साथ सनातम शिक्षा पद्धति में समन्वय स्थापित करना जरूरी है। हर धर्म ग्रंथ में आंतरिक शांति का संदेश देता है। उसे पढ़ना और समझना जरूरी है। आध्यात्मिक गुरु गौरांग दास ने गुरुवार को मिहान स्थित इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेमेंट (आईआईएम) नागपुर में पत्रकारों से चर्चा की।

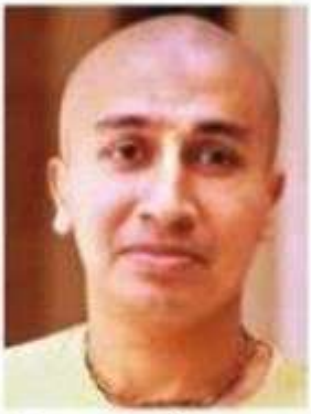

संस्थान में उनका मार्गदर्शन शिविर आयोजित किया गया था। दास ने कहा कि यह सवाल बार बार उठाया जाता है कि हमारे देश में मंदिरों की जरूरत क्या है? भारत में आज करीब 20 लाख मंदिर है। दास के अनुसार मंदिर मानसिक स्वास्थ्य सुधारने का काम करते हैं। तन मन और आत्मा का मिलन कराते हैं। भारत में हर दिन औसतन 370 लोग आत्महत्या करते हैं। इस समस्या के मूल में जाने पर पता चलता है कि आधुनिक शिक्षा पद्धति हमें बाहरी बातों से लड़ना तो सिखाती है, लेकिन मन में चल रहे द्वंद से लड़ना नहीं सिखाती। परिणाम स्वरूप आत्महत्याएं बढ़ रही है। ऐसे में आधुनिक शिक्षा को सनातन शिक्षा पद्धति से जोड़ना जरूरी है। भारत ने नई शिक्षा नीति अपनाई है, जिसमें आध्यात्मिक शिक्षा पर जोर दिया गया है। यह अच्छी बात है। सभी धर्मग्रंथों में मन की शांति का मार्ग बताया गया है। कार्यक्रम में आईआईएम नागपुर के संचालक डॉ. भीमराया मैत्रैयी उपस्थित थे।